मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता ।

दुनियाँ के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है ।

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 54 | दिसम्बर 1992 | 50 पैसे

दुनियाँ में मजदूरों के संघर्ष और उनसे उठता एक सवाल

फरीदाबाद में, भारत में मजदूर आन्दोलनों की रिपोर्टों/विश्लेषणों के संग-संग हम अन्य देशों में मजदूर संघर्षों की भी चर्चा करते रहते हैं। लेकिन इस अंक में हम फरीदाबाद/भारत की घटनाओं को स्थान नहीं देंगे। आज की हकीकत और इसके वाँछित विकल्प की मूलभूत जरूरत पर एक विशेष जोर देने के लिये हम यह कर रहे हैं।

इटली

भारी-भरकम कर्ज में डूबती जा रही इटली सरकार को अन्ततः तेजी से हाथ-पैर मारने पड़े हैं। १९९३ के बजट के लिए वेतन जाम, डी ए समाप्त, पेनशनों में कटौती स्वास्थ्य-शिक्षा-ट्रांसपोर्ट जैसी आवश्यकताओं में कटौती, टैक्सों में चौंकाने वाली वृद्धि आदि-आदि की योजना इटली सरकार ने सितम्बर में प्रस्तुत की । सरकार द्वारा इस प्लान की घोषणा होते ही इटली के कई औद्योगिक केन्द्रों में मजदूरों ने चाणचक्क हड़तालें की ।

इस पर बिचौलियों ने अपनी डुगडुगी तेज कर दी। इटली की तीन बड़ी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों ने "हड़तालें" संगठित करनी शुरू की। देशहित आदि के नाम पर सरकार व मैंनेजमेंटों से गठजोड़ करके मजदूरों को निचोड़ने में हाथ बटा रहे नेताओं ने गरमागरम भाषण झाड़ने आरम्भ किये। क्षेत्रीय आधार पर चार घण्टे की "हड़तालों" का सिलसिला ट्रेड यूनियनों ने शुरू किया।

बिचौलियों की ऐसी पहली कार्रवाई चार घण्टों के लिए २२ सितम्बर को हुई। नेताओं की फर्जी-रस्मी हड़ताल को वास्तविक हड़ताल की ओर धकेलते हुए इटली के कई शहरों में हजारों मजदूरों ने जलूस निकाले। हड़ताल की वजह से दो बड़े अखबार उस दिन नहीं छपे।

दूसरी रस्मी-फर्जी आम हड़ताल का आहवान इटली में सबसे बड़ी यूनियन ने २३ सितम्बर को किया। उस दिन फ्लोरेन्स शहर में एक आम सभा में उस यूनियन के बड़े लीडर को मजदूरों ने घेर लिया और उस पर सड़े टमाटर फेंके। "मजदूरों के नेता" को मजदूरों से पुलिस ने बचाया।

२४ सितम्बर को फिर इटली के कई शहरों में मजदूरों ने जलूस निकाले। इस बार मजदूरों की भीड़ ने नेपल्स शहर में एक आम सभा में दूसरी केन्द्रीय ट्रेड यूनियन के बड़े नेता पर हमला किया। यहाँ भी "मजदूर नेता" पर मजदूरों को बेच खाने का आरोप हमलावर मजदूरों ने लगाया।

तीसरी केन्द्रीय ट्रेड यूनियन ने २ अक्टूबर को अपनी रस्म पूरी की। इस रस्मी-फर्जी हड़ताल को भी वास्तविक हड़ताल की राह पर बढ़ाते हुए मजदूरों की भीड़ ने तूरिन शहर में आम सभा के दौरान नेताओं पर नट बोल्टों की बौछार की। लाल किले पर भारत का प्रधानमंत्री जैसे बुलेट प्रूफ शीशे की आड़ लेता है वैसे ही इटली में ट्रेड यूनियन नेताओं ने मजदूरों के हमले से बचने के लिये बुलेट प्रूफ शीशों का इस्तेमाल किया हाँ, २ अक्टूबर को रेल, डाक, नगर परिवहन, सरकारी कार्यालयों में काम ठप्प रहा। अर्न्तराष्ट्रीय वायु सेवा पर असर पड़ा। रोम में विशाल जलूस पर आँसू गोलों से पुलिस ने हमला किया और गिरफ्तारियां की।

और, तूरिन शहर में यूनियन लीडरों ने भाषणबाजी के लिये २ अक्टूबर को एक सिनेमा हाल बुक किया था भाषण शुरू होते ही मजदूर हाल से उठकर चल दिये, वाक आउट कर गये। नेताओं ने कुर्सियों को भाषण सुनाये।

ऐसे में बड़ी केन्द्रिय यूनियनों ने अपनी साख-सौदेबाजी की औकात बचाने के लिये अक्टूबर-मध्य में एक दिन की "आम हड़ताल" के रूप में एक बार फिर अपना रस्मी-फर्जी दाँव खेला। खबर बनी - "ईटली में अस्सी लाख मजदूरों की हड़ताल" पर यह यहाँ भारत में २५ नवम्बर की घटना से भिन्न नहीं थी - दोनों घटनाओं के बाद शान्ति है! सरकारों का काम चालू है ....

इटली में मजदूरों को यूनियनों द्वारा शुरू की गई अध्यापकों की "हड़ताल" को बेस कमेटियां आधार समितियाँ बनाकर नियन्त्रण अपने हाथों में लेकर उसे असल हड़ताल में बदलकर चलाने का अनुभव है।

[सामग्री हमने वरकर टुडे के अक्टूबर ९२ अक तथा वरकर वॉयस के नवम्बर-दिसम्बर ९२ अंक से ली है।]

ईरान

इस वर्ष जुलाई के आरम्भ में इस्फहान स्थित ईरान के विशाल स्टील प्लान्ट के २५ हजार आन्दोलन रत मजदूरों को शान्त करने के लिये मैंनेजमेंट ने सितम्बर में वेतन बढ़ाने का वादा किया था। मैंनेजमेंट का आश्वासन थोथा साबित होते ही स्टील मजदूर ६ सितम्बर को काम बन्द करके बैठ गये। यहाँ पर याद रखने की जरूरत है कि ईरान में मजदूरों द्वारा संगठन बनाने और हड़ताल करने पर कानूनी पाबन्दी है आन्दोलनरत मजदूरों की गिरफ्तारी और कत्ल ईरान में आम बात है।

आठ साल चले ईरान-इराक सरकारों के बीच युद्ध के दौरान क्रूरतम सख्ती के बावजूद युद्ध के विरोध में बहादुराना संघर्ष करने वाले मजदूर युद्ध के बाद चुप नहीं बैठे हैं। युद्ध के बाद के इन चार सालों में वेतन वृद्धि ईरान में मजदूरों के संघर्ष की धुरी बनी हुई है। पिछले वर्ष के वसन्त में तेल मजदूरों की हड़ताल इस सिलसिले की एक महत्व पूर्ण कड़ी बनी। ईरान सरकार पर पड़ रहे इन दबावों की वजह से पिछले वर्ष गत दशक में न्यूनतम वेतन में सरकार ने अधिकतम वृद्धि की।

बन्द होती फैक्ट्रियां हाल ही में १५ कपड़ा मिलें, एक मेडिकल औजार बनाने वाली फैक्ट्री तथा एक जूता फैक्ट्री बन्द हो गई, नित बढ़ते भाव, छलांगे लगाती बेरोजगारी अन्य स्थानों की ही तरह ईरान में भी आग में तेल का काम कर रहे हैं। गिरफ्तारियों, गिरोहबन्द गुण्डागर्दी और कत्लों के आतंक के बावजूद ईरान में मजदूरों के संघर्ष बढ़ रहे है। सरकार ने हड़तालों की खबर छापने पर रोक लगा रखी है। फिर भी, स्टील और तेल मजदूरों की हड़तालों की ही तरह राजधानी तेहरान में वाटर वरकरस की हड़ताल सरकारी सेन्सर से छनकर ईरान में भी अखबारों में छपी हैं।

और, ईरान में संघर्षरत मजदूरों से एकजुटता के संगठित प्रयास स्वीडन-डेनमार्क - अमरीका - कनाडा आदि में हो रहे हैं।

[सामग्री हमने अंग्रेजी व फारसी में छपते अन्तरराष्ट्रीयतावादी मजदूर अखबार, वरकर टुडे के अक्टूबर १९९२ अंक से ली है।]

न्यूजीलैन्ड

न्यूजीलैंड स्थित मैंनेजमेंटों को "अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगी बनाये रखने के लिए" वामपन्थी-दक्षिणपन्थी पार्टियों द्वारा बारी-बारी से सरकार द्वारा छंटनी, वेतन में कटौती, वर्क लोड में वृद्धि का सिलसिला जारी रखने के बावजूद हालात यह बनी कि पहली मई ९१ को एक नया कानून बना कर न्यूजीलैंड सरकार को वहां मजदूरों पर सीधा बड़ा हमला बोलना पड़ा है। प्रत्येक मजदूर को ठेके पर काम पर रखने, वर्क लोड में भारी वृद्धि करने, वेतन में कटौती करने, संगठित विरोध-हड़ताअ पर पाबन्दी वाला यह कानून बहुत से मजदूरों पर थोप भी दिया है। इस प्रकार न्यूजीलैन्ड में बहुत से मजदूरों पर वर्कलोड दुगना कर दिया गया है। वेतन में ३० परसैन्ट कटौती कर दी गई है, ड्यूटी के घण्टे बढ़ा दिये गये हैं।

इस हमले के खिलाफ न्यूजीलैंड के इतिहास की अब तक की हड़तालों की सबसे बड़ी लहर उठी हुई है - पैसीफिक स्टील, साउथ पैसीफिक मीटस, अध्यापकों, नर्सों की हड़तालें। मीट वरकरस द्वारा वेतन कटौती के विरोध में डटे रहने पर मैंनेजमेंट ने तालाबन्दी कर दी है। हालात की एक झलक के लिये यहाँ हम न्यूजीलैंड फोरेस्ट प्रोडक्टस कम्पनी के घटनाक्रम पर एक नजर डालेंगे।

फोरेस्ट प्रोडक्टस की न्यूजीलैंड में चार मिलें हैं। इनमें १९८० में चार हजार पूर्णकालिक मजदूर काम करते थे। १९८७ में यह संख्या २३५० हो गई, १९९० में १५५० और अक्टूबर ९१ में एक हजार एक सौ। यह सब कम्पनी को "अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगी बनाए रखने के लिए" मैंनेजमेंट ने यूनियन के सहयोग से किया था। "हड़ताल नहीं" की एग्रीमेंट भी यहाँ की गई थी। फिर भी, नये बड़े हमले करने के लिए मैंनेजमेंट ने कम्पनी की चार मिलों को एक-दूसरे से अलग करने की घोषणा कर दी।

इस पर इस वर्ष १७ जुलाई को दो मिलों के मजदूरों ने हड़ताल शुरू कर दी और ४ अगस्त को बाकी दो मिलों के मजदूर भी हड़ताल में शामिल हो गये। स्टील वरकर, बस ड्राइवर, फोरेस्ट्री और कागज उद्योग के मजदूर हड़तालियों का समर्थन कर रहे हैं।

जर्मनी के एक पेशेवर हड़ताल तोड़क कर्मचारियों को पुलिस की मदद से मिलों में घुसाने मैनेजमेन्ट की कोशिशों को हड़ताली मजदूरों ने विफल किया हुआ है। मैनेजमेन्ट ने एक मिल के गिर्द ब्लेड की धार वाले तार लगा दिये हैं तो दूसरी मिल के गिर्द काँटेदार तार खींचकर फौजी स्टाइल में सन्तरी चौकियाँ बना दी हैं।

[सामग्री हमने वरकरस रेवोल्युशन के १९९२ के संयुक्तांक १७-१८ से लीहै।]

ब्रिटेन

अन्तरराष्ट्रीय सट्टेबाजों द्वारा इस वर्ष १६ सितम्बर को आरम्भ किये झटकों से ब्रिटेन की मुद्रा, पाउन्ड, पाताल की ओर तेजी से फिसली। बैंक आफ इंगलैंड और जर्मनी के बुन्डेसबैंक को हालात पर काबू पाने में पसीने आ गये। राहत की सांस लेते वक्त इन देशों के साहब लोगों के बीच हुई चिक - चिक बेशक तनाव के दौर का गुबार निकालने के लिए थी पर यह स्पष्ट हो गया कि मुद्रा का वह संकट अर्थव्यवस्था के संकट का लक्षण मात्र था। और अर्थव्यवस्था की धुरी, आधार ब्रिटेन में अभी भी औद्योगिक उत्पादन है।

१६ सितम्बर ने ब्रिटेन सरकार को मजबूर किया कि वह टाल-मटोल छोड़कर कड़ुवे फैसले करे। ऐसी योजनाएं तो तैयार रहती ही हैं, सरकार ने अब उनमें से एक प्रमुख योजना पर स्वीकृति की मोहर लगाई - ब्रिटेन सरकार ने घोषणा की कि देश को बरबादी से बचाने के लिए उसने तीस कोयला खदानें जहां २५ हजार मजदूर काम करते हैं, उन्हें तत्काल बन्द करने का फैसला किया है।

शेष पृ० २ पर

आष्ट्रेलिया

इस वर्ष मार्च में एन बी एच पीको ग्रुप के डायरेक्टर ने घोषणा की "प्रत्येक मजदूर को हर रोज बर्खास्तगी की आशंका के साथ काम आरम्भ करना चाहिये।" इसके लिये "नई स्टाइल" से संचालन कार्य करने की आम राय आष्ट्रेलिया में मैनेजमेंटों में कुछ समय से उभर रही थी। "अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगी बने रहने के लिये" ऑल आष्ट्रेलिया आधार पर बिचौलियों से एग्रीमेन्टें करके मजदूरों को निचोड़ने का रिवाज काफी समय पहले ही अपर्याप्त हो गया था। उत्पादन शाखा के आधार पर फेडरेशनों से ऐसी एग्रीमेंटों को भी जल्दी ही खारिज करना पड़ा था और फैक्ट्री आधार पर बिचौलियो से सौदे करके मैनेजमेन्टें कुछ साल से आष्ट्रेलिया में छँटनी, वेतन जाम, वर्क लोड में बृद्धि और सुविधाओं में कटौती अधिकाधिक थोप रही हैं। फिर भी, "अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगी बने रहने" की जरूरत ने आष्ट्रेलिया में मैनजमेन्टों के लिये यह आवश्यक बना दिया कि वे मजदूरों के शोषण में तत्काल भारी बृद्धि करें। इसके लिये "नई स्टाईल" मैनेजमेंट, इसके लिये प्रत्येक मजदूर में डर-दहशत पैदा करना। न्यूजीलैन्ड की ही तरह हर मजदूर से अलग-अलग एग्रीमेन्ट करके ठेके पर काम करवाने की योजना आष्ट्रेलिया में भी बनी।

आष्ट्रेलिया में वामपन्थी पार्टी की सरकार है। बिचौलियों का इस पार्टी में दबदबा रहा है। आष्ट्रेलिया सरकार ने मैनेजमेंटों से कहा कि वे पहले की ही तरह मजदूरों पर यह हमला भी यूनियनों के सहयोग से करें। लेकिन बहुत सी मैनेजमेंटों की यह राय थी कि इतना बड़ा हमला करने के लिये बिचौलियों को हटाना जरूरी है। एन बी एच पीको ग्रुप ने इसमें पहल की। इस ग्रुप की असोसियेटेड पेपर एन्ड पल्प मिल्स मैनेजमेंट ने हड़ताल थोपने व उसे तोड़ने की तैयारी करके "नई स्टाइल" मैनेजमेंट स्थापित करने की योजना पर अमल किया। आष्ट्रेलिया में मैनेजमेन्टों ने इसे ट्रायल केस के तौर पर अपनाया।

बखेड़े के लिये असोसिएटेड पेपर मैनेजमेन्ट ने बर्नी मिल में भत्तों व सुविधाओं में एकतरफा कटौती की घोषणा की। फिर इस वर्ष मार्च के आरम्भ में मैनेजमेन्ट ने वहाँ के बॉयलर आपरेटरों से हड़ताल तोड़कों को प्रशिक्षण देने का आदेश दिया और उन द्वारा यह करने से इनकार करते ही ग्यारह बॉयलर आपरेटरों को डिसमिस कर दिया। जवाब में ग्यारह सौ मजदूरों ने हड़ताल कर दी।

बिचौलियों ने मामले सरकारी कमीशन को सुपुर्द करके १४ अप्रैल को हड़ताल समाप्त करवा दी इस राय से नई दस वर्षों में असोसिएटेड कम्पनी ने यूनियन के सहयोग से १६०० मजदूरों की छँटनी की है। इस बार भी सरकारी कमीशन ने मैनेजमेंट के पक्ष में फैसला दिया और बिचौलियों ने फिर इसे "मजदूरों की बड़ी जीत" घोषित किया।

फैक्ट्री में पुन; प्रोडक्शन आरम्भ होते ही मैनेजमेंट ने मजदूरों पर चौतरफा हमला बोल दिया - हर डिपार्टमेंट के मजदूरों को आदेश दिया गया कि वे हड़तालतोड़कों को प्रशिक्षण दें; बॉयलर आपरेटरों का अन्य विभागों में ट्रान्सफर कर दिया सब नये मजदूरों के ड्यूटी के घन्टे बढा दिये और उनके वेतन में २५ प्रतिशत कटौती कर दी: ११ मई को ५ बॉयलर आपरेटरों को पुलिस बुला कर गिरफ्तार करवा दिया; फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी।

मजदूरों ने तत्काल पिकेट लाइन खड़ी कर दी। मैनेजमेंट ने सुरक्षा गार्डों व गुन्डों के जरिए पिकेट लाइन तोड़कर नये लोगों को फैक्ट्री में घुसाने की कोशिश की। मजदूरों ने उन्हें नाकाम कर दिया। बिचौलिये नई एग्रीमेन्ट ले कर आये पर मजदूरों ने उसे ठुकरा दिया। ४ जून को अदालत ने पुलिस को आदेश दिया कि बर्नी मिल क्षेत्र में 'भीड़ के राज' को खत्म करे और 'कानून के शासन को पुनः स्थापित' करे। हुक्म मिलते ही एक सौ पुलसियों और कम्पनी के फुटकर गुन्डों ने मजदूरों की पिकेट लाइन तोड़ने के लिये धावा बोला। ट्रकों को फैक्ट्री में घुसाने की कोशिश की गई और पहले हमले में १४ मजदूर गिरफ्तार किये गये पर मजदूरों ने पुलिस और फुटकर गुन्डों को भगा दिया।

इस हमले की खबर फैलते ही ४ जून की रात होते-होते सैकड़ों अन्य मजदूर बर्नी मिल पर पिकेट लाइन में शामिल हो गये। असोसियेटेड पेपर के सघर्षरत मजदूरों के समर्थन में आल-आष्ट्रेलिया में हड़ताल के हालात बनने लगे। सरकार और बिचौलियों ने लीपा-पोती करके ११ जून को फैक्ट्री में काम आरम्भ करवा दिया। आष्ट्रेलिया में मैनेजमेंटों का यह ट्रायल केश फेल हो गया। हमलों के लिये बिचौलियों का सहयोग लेते रहना मैनेजमेंटों को फिलहाल जरूरी लगा है।

[सामग्री हमने वरकरस रेवोल्यूशन से ली है।]

पोलैंड

देश व्यापी हड़तालों से एक प्रकार के सरकारी तन्त्र को तहस-नहस करने के बाद आज पोलैंड में मजदूरों की स्थिति का बयान एक महिला मजदूर के शब्दों में;

"हम तीनों शिफ्टों में काम करती हैं। आठ घन्टे की नाइट शिफ्ट के बाद सुबह ११ बजे तक भोजन सामग्री के लिये लाइन में खड़ा होना, फिर खाना बनाना और दो एक घन्टे सोने के बाद वापस काम पर . . .

"टी वी पर शाम को भाव बढ़ाने की नित नई घोषणायें की जाती हैं। काम करते वक्त हम एक दूसरे से भावों पर चर्चा करते हैं और गालियाँ देती हैं। हमें कहा जाता है कि हड़ताल की वजह से प्रोडक्सन गिरेगा और हमें व फैक्ट्री को नुकसान होगा। जलूसों से कोई खाश फरक नही पड़ता पर जलूस सरकार को कम से कम इतना तो याद दिला ही देते हैं कि मजदूर वर्ग है।"

[सामग्री हमने एचेनजेज के जुलाई-दिसम्बर ९१ अंक से ली है।]

ब्रिटेन... पृ० १ का शेष

सरकारी घोषणा के खिलाफ ब्रिटेन के कोयला खदान मजदूर सड़कों पर निकल आये। २५ अक्टूबर को लन्दन में विशाल जलूस निकला। इससे पहले २१ अक्टूबर को खदान मजदूरों के समर्थन में न्यूक्लीयर पावर वरकरों, अध्यापकों आदि ने हड़ताल की। और बिचौलिये तुरही बजाते फिर आगे-आगे हो लिये।

देश को बचाने वाले आंकड़ों और हिसाब को ब्रिटेन सरकार बताती रही और पीछे हटती रही। तीस की बजाय ६ खदानें तत्काल बन्द करने और २१ को जनवरी ९३ में बन्द करने का फैसला करके सरकार ने बिचौलियों की नौटँकी की सहायता से फिलहाल माहौल को कुछ ठण्डा कर दिया है।

देश को बचामे के नाम पर ही १९८४ में ब्रिटेन सरकार ने ४० हजार कोयला खदान मजदूरों की बलि दी थी - लम्बी और तीखी हड़ताल को बिचौलियों के जरिये अन्धी गली में फँसा कर ही ब्रिटेन सरकार ने ४० हजार खदान मजदूरों की छँटनी की थी। ब्रिटेन में तब से कारखानों-अस्पतालों-स्कूलों में कार्यरत लाखों वरकरों की अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य के लिये छँटनी की गई है। और ब्रिटेन में अर्थव्यवस्था का स्वास्थ्य है कि गिरता ही जा रहा है...

सामग्री हमने वरकरस वायस के नवम्बर-दिसम्बर ९२ के अंक से ली है।]

ब्राजील

वोल्टा रेजेंडा स्थित ब्राजिल के सबसे बड़े इस्पात कारखाने के बीस हजार मजदूरों ने हड़ताल की। स्टील प्लान्ट के गेटों पर फौज ने टैंक अड़ा दिये। हड़ताल तोड़ने के लिये कारखाने में घुस रहे सात सौ सैनिकों और मजदूरों के बीच टकराव हुआ. [फ म स दिसम्बर १९८८]

कोरिया

१६ मार्च ८९ को राष्ट्रपति ने हथियारबन्द पुलिस का इस्तेमाल करके राजधानी सिओल में ५ हजार अन्डरग्राउन्ड रेल मजदूरों की हड़ताल तोड़ी।

दक्षिण कोरिया के सबसे बड़े औद्योगिक नगर, उलसान की सबसे बड़ी कम्पनी ह्यून्दाई भारी उद्योग में बीस हजार मजदूरों की १०९ दिन से जारी हड़ताल को तोड़ने के लिये ३० मार्च ८९ को १४५०० हथियारबन्द सिपाहियों ने हमला किया। ७०० मजदूर गिरफ्तार किये गये। [फ म स, मई ८९]

अमरीका

एयर कन्ट्रोलर की हड़ताल को तोड़ने के लिये अमरीका के राष्ट्रपति ने एयर फर्स का इस्तेमाल किया और इमरजैन्सी कानूनों के तहत सब हड़तालियों को डिसमिस कर दिया रेलवे मजदूरों द्वारा एक कम्पनी में हड़ताल करते ही चालीस रेल कम्पनियों ने तालाबन्दी कर दी और अमरीका सरकार ने रेल मजदूरों द्वारा हड़ताल करने पर पाबन्दी लगा दी; पिट्स बर्ग की एक कोयला खदान की हड़ताली मजदूरों के समर्थन में दस प्रान्तों में फैली चालीस कोयला खदानों के मजदूरों ने हड़ताल की; जनरल मोटर कम्पनी ७४ हजार और मजदूरों की छँटनी करेगी; १९८६ के बाद से साठ हजार मजदूरों को निकाल चुकी कम्प्यूटर महाबलि आई बी एम प्रचार करती है कि "एक परिवार" होने के नाते वह "छँटनी नही करती" - इस साल आई बी एम में ३२ हजार नौकरियाँ खत्म करने की योजना है; विश्व की सबसे बड़ी हवाई यात्रा कम्पनी ट्रान्स वर्ल्ड एयरलाइन्स दिवालिया हो गई है, .

गैन्गस्टर बिचौलिये-कटौतियाँ-हड़तालें-तालाबन्दियाँ-सरकार का दखल, यह सब अब अमरीका में फैक्ट्रियों-ट्रान्सपोर्ट-अस्पतालों-बैंकों-अखबारों में आम बात हो गई है।

[सामग्री हमने दी पीपल और न्यूज एन्ड लैटरस से ली है।]

एक सवाल

इस अंक में हम कुछ स्थानों की कुछ घटनाओं की चर्चा ही कर पाये हैं। लेकिन आप दुनियाँ के किसी इलाके के पिछले कुछ वर्षों के घटना क्रम पर नजर डालिये हकीकत की यही तस्वीर उभर कर आयेगी; छँटनी, वेतन में कटौती, वर्क लोड में वृद्धि, सुविधाओं में कटौती, फैक्ट्रियों का बन्द होना, बेरोजगारों की संख्या का बढ़ना।

आज दुनियाँ में हर जगह इस बढ़ती बदहाली के खिलाफ मजदूरों का प्रतिरोध भी एक हकीकत है।

मजदूरों के संघर्षों को विफल करने के लिये तालाबन्दी, हड़ताल को लम्बा खींचना, फौज-पुलिस और फुटकर गुन्डों का इस्तेमाल विश्व के प्रत्येक इलाके में एक सामान्य बात हैं।

और, एग्रीमेन्टों के बाद मजदूरों का बिचौलियों के खिलाफ बढता आक्रोश भी आज एक आम घटना हो गई है।

असफलताओं के सिलसिले ने, बार-बार की हार ने मजदूरों की घुटन को बढाया है। यह आज दुनिया-भर में सतत हिंसा, बढ़ती हिंसा का एक प्रमुख स्रोत है। मजदूर-मजदूर के बीच यह हिंसा इन क्षेत्रों व रूपों में प्रकट हो रहो है -

- परिवारों में बढ़ती कलह और मारपीट।
- फैक्ट्री के अन्दर, कार्यस्थल पर, बस्ती में मजदूरों में आपस में गाली गलौच और हाथा-पाई में वृद्धि।
- परमानेन्ट, कैजुअल और ठेकेदारों के मजदूरों के वीच बढ़ता मनमुटाव।
- लोकल और बाहर के मजदूरों के बीच तनाव में वृद्धि। क्षेत्रीय भावनाओं का बढ़ना।
- धार्मिक जुनून का फैलता असर।
- देश के आधार पर युद्धों में मजदूरों द्वारा एक-दूसरे का कत्ले-आम। साथ ही प्रवासी मजदूरों पर हमलों में वृद्धि।
- राष्ट्र-नस्ल-रंग के नाम पर अहंकार में वृद्धि और अन्य समूहों के सफाये के प्रयासों का बढ़ना।
- महिला मजदूरों को हमलों का विशेष निशाना बनाना। दकियानूसी धारणाओं तथा बेहूदी हरकतों का बढ़ना। महिलाओं के खिलाफ हिंसा में आम वृद्धि।

इन तथ्यों को ध्यान में रखकर हमें अपने आप से पूछना चाहिए: मजदूर पक्ष का आज चरित्र क्या होना चाहिए?

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेरसिंह के लिए उत्तरांचल प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित: